हम नवा
पुणे, गुरुवार, दि. १६ जुलै २०२६

फ्यूल एज्युकेशन इंस्टीट्यूट ने पेश किया 'माऊली-एक टाइमलेस ट्रेडिशन'

पुणे। हमनवा प्रतिनिधी

चेहरे के सूक्ष्म भाव, विशिष्ट हाथों की मुद्राएं, जटिल लयबद्ध पैर की गतिविधियों और शास्त्रीय संगीत के साथ प्रस्तुत किए गए भरतनाट्यम के माध्यम से पुणेकर सचमुच पांडुरंग की भक्ति में खो गए थे. एमईएस ऑडिटोरियम में फ्यूल एजुकेशन इंस्टीट्यूट द्वारा भक्ति, परंपरा, कला और ईश्वर के बीच संबंधों का उत्सव 'माऊली-एक टाइमलेस ट्रेडिशन' आयोजित किया गया था पंढरपुर वारी की भावना को जीवंत करन वाली कला का अनुभव अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध भरतनाट्यम नर्तक, कोरियोग्राफर और शोधकर्ता कलईमामणि बाला देवी चंद्रशेखर के एक विशेष प्रदर्शन के माध्यम से किया गया था.

कलईमामणि बाला देवी चंद्रशेखर ने अपने नृत्य के माध्यम से पांडुरंग और भक्तों के बीच एक बंधन बनाया. उन्होंने अपनी भक्ति की गहराई को अपने हाथों के इशारों के साथ साथ अपनी आंखों और चेहरे के भावों से भी व्यक्त किया. इस नृत्य के माध्यम से दर्शकों को लगा कि पूरा ब्रह्मांड एक है. संत तुकाराम, संत ज्ञानेश्वर, संत नामदेव और संत एकनाथ महाराज के विभिन्न अभंगों, ओव्यास और भारुदों पर आधारित नृत्य प्रस्तुत किए गए। इनमें उदंड पहले उदंड ऐकिले, सुंदर ते ध्यान, रूप कथा लोखानी, खेल मंडियाला वलवंती घई और काशी जाओ में वृन्दावन, मुरली वाजिटो कान्हा जैसी रचनाएं शामिल हैं। पंढरी की वारी के इतिहास, संस्कृति और

विभिन्न भावनाओं को भरतनाट्यम के माध्यम से प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया गया, जो आध्यात्मिकता से भरपूर है। इस अवसर पर फ्यूल एजुकेशन इंस्टीट्यूट के संस्थापक अध्यक्ष डॉ. केतन देशपांडे, फ्यूल एजुकेशन इंस्टीट्यूट की सीईओ मयूरी देशपांडे, महाराष्ट्र एजुकेशन सोसयटी के सीईओ सचिन अंबरडीकर, अमित वाजगे, चन्द्रशेखर बलरामन सहित समाज के विभिन्न क्षेत्रों के गणमान्य नागरिक बडी संख्या में उपस्थित थे. कलईमामणि बाला देवी चंद्रशेखर ने कहा, हर कलाकार को समाज से प्रेरणा और समर्थन मिलता है. इसलिए समाज का कर्ज चुकाना कलाकार की जिम्मेदारी है. मैं. महिलओं के सशक्तिकरण के लिए फ्यूल एजुकेशन इंस्टीट्यूट द्वारा किए जा रहे कार्यो का समर्थन करने के लिए अमेरिका से भारत आया हूं. मैंने इस कार्यक्रम के लिए कोई मानदेय स्वीकार नहीं किया है.